❑कहाणी

बंटवारौ

हनुमान दीक्षित

कहाणीकार परिचै

कहाणीकार हनुमान दीक्षित रौ जलम 4 मई, 1943 में होयौ। अेम.अे., बी.अेड. तांई भण्योड़ा श्री दीक्षित अध्यापन-सेवा करता थकां प्रधानाध्यापक रै पद सूं सेवानिवृत्त होया। आप हिंदी अर राजस्थानी दोनूं में लगोलग सिरजण करयौ। राजस्थानी में वांरा 'गांव-गळी री कहाणियां' अर 'माटी रौ मकान' कहाणी-संग्रै छप्योड़ा। 'डाकी दायजौ' नांव सूं आकासवाणी सारू रेडियो-रूपक ई लिख्यौ। आपरी कहाणियां जमीन सूं जुड़्योड़ी ग्राम्य परिवेस री रंगत लियोड़ी है, जिणमें राजस्थानी री माटी री मधरी-मधरी महक आवै। वै केई साहित्यिक संस्थावां सूं जुड़्योहा हा। राजस्थानी री सेवा सारू वांरौ काम सरावण जोग रैयौ। वै राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी रा उपाध्यक्ष रैया। इणरै अलावा वै राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर रा ई सदस्य रैया। कहाणियां रै अलावा वां राजस्थानी में कवितावां, व्यंग्य, बाल-साहित्य अर निबंध ई लिख्या। आपरौ सुरगवास 17 दिसंबर, 2015 नै होयौ।

पाठ परिचै

बडेरां री भेळप अर साझा रीत नैं दरकिनार करती आज री पीढी री मनोदसा अर फंटवाड़ै नैं चौड़ै करती सास्वत कहाणी 'बंटवारौ' आम आदमी रै जीवण री कहाणी है। आज भेळप अर भाईचारौ मिटता जाय रैया है। परिवार री संपत संपत्ति रै चक्कर में चकरीज री है। गांव री आतमा में जकौ परमातमा रौ वासौ हौ, बठै बगत रै बदळाव री चौसर सगळौ सत्यानास कर न्हाख्यौ। लोगां री जमीन अर मन दोनूं बंट रैया है। जमीन रै बंटण सूं घरां री दरारां आंगणै सूं लेयनै मिनख रै मन-मगज तांई बधगी है। साझा खेती आरथिक, सामाजिक अर वैग्यानिक आद सगळी दीठ सूं महताऊ है, पण आप-आपरा स्वारथ मांयलै धीरज नैं कपूर बणाय दियौ। सगळी भेळप, भाईचारौ, रिस्ता री मीठास, मिनखाचारौ सगळौ कीं होळै-होळै मिनख सूं अळगौ होवै है। इण सारू चेतणौ जरूरी है। दीक्षित जी आपरी इण कहाणी मांय बंटवारै री पीड़ नैं सांगोपांग ढंग सूं उकेरी है अर आखर कहाणी रै अंत में भेळप री हूंस अर आस सागै कथानक सिमटै। कहाणी में बगत सागै मिनख अर गांव दोनूं में बदळाव नैं बतायौ है। कुल मिळायनै बंटवारौ कहाणी सामाजिक समस्या प्रधान ग्रामीण परिवेस री प्रासंगिक अर युगीन कहाणी री पांत में सिरै आवै।

बंटवारौ

रामसरौ मोटौ गांव। चौधरी रतनाराम इलाकै रौ मोटौ मिनख। मोटी गुवाड़ी रौ धणी। रियासत रै बगत सूं मिल्योड़ी लंबरदारी। आजादी आयी। लंबरदारी गई परी, पण लोग अर सरकारी कारूंदा वांनैं लंबरदार सा'ब कैवै। चौधरी कनै मोकळी जमीन। अै ई कोई तीन सौ बीघा अर तीन भाई। बिचलै रौ नांव हेतराम जकौ खेती-पाती री देखभाळ करै। छोटै भाई रौ नांव साहबराम, जकौ दसवीं जमात तांई पढ्योड़ौ। राजनीति भी करै, सागै ई मंडी जायनै खेती री निपज बेचणी अर बठै सूं घर री जरूरत मुजब चीज-बस्त खरीदनै ल्यावण रौ काम ई करै।

खेती रौ घणकरौ काम–पाड़, पाती, बीजणौ, अनाज काढणौ आद ट्रैक्टर सूं करै। पण चौधरी नैं पुराणी रीत सारू मदुवौ ऊंठ राखण रौ घणौ कोड। सरदी रै टैम मांय बाखळ में खड़्यौ ऊंठ बलबलावै अर माकड़ी पीटै जद देखनै चौधरी रौ जी–सोरौ होय जावै। चौधरी सवारी करण खातर घोड़ी ई राखै। गांव–गांवतरौ करनै वौ अपूठौ आवतौ तद भीमलै रै ताल में पड़ती घोड़ी री टापां सूं ठा पड़ जावतौ कै चौधरी आवै है। वौ कारू–कारिंदा रै भरोसै ऊंठ–घोड़ी नीं छोडतौ। खुद नीरतौ अर आथण पौर रौ पाणी पावण सारू जोहड़ै ले जावतौ। गांव री बहू–बेटियां चौधरी रौ घणौ काण–कायदौ राखती। जद पाणी लावती बीनणियां साम्हीं मिळ जावती तौ वै आदर देवण खातर पीठ मोड़नै ऊभी ढब जावती।

चौधरी रै घरै दूध–छाछ री कमी नीं ही। तीन भैंस अर पांच–छह गायां नोहरै में हरदम बंधी रैवती। दिन ऊगणै सूं पैली ई बिलोवणै री आवाज उगाड़ में दूर–दूर तांई सुणीजती। भाख फाटतां रै सागै गांव री लुगायां अर टाबर लोटा, हांडी अर जग लेयनै छाछ खातर चौधरी री ड्योढी माथै ऊभा होय जावता।

आथण पौर चौधरी री चूंतरी माथै गांव री चौपाळ जुड्या करती। चौधरी होकौ भरनै मुड्ढै माथै बैठ जावतौ। सै भांत रा लोग आ बैठता। होकै री कुरड़–कुरड़ रै सागै गांव–देस री, सुख–दुख री बातां होया करती। चौधरी गांव रा गरीब–गुरबां रौ घणौ खयाल राख्या करतौ। जद कदै इलाकौ अकाळ री चपेट में आ जावतौ तद आपरी बखारी अर चारै–तूड़ी रै कुपां रौ मूंडौ खोल देवतौ। सगळां रै सुख–दुख रौ सीरी हौ। जरूरतमंद मिनख उम्मीद लेयनै आवतौ अर मूंडै पर हांसी लियां पाछौ जावतौ। लोग चौधरी रै भरोसै आपरी बेटी रौ ब्यांव मांड देता। बण जींवतै–जी ना–नुकर नीं करी। आधी रात पछै तांई चौपाळ लागी रैवती। जद होकौ ठंडौ पड़ जावतौ तद कारू–कारिंदा खीरा अर तंबाकू ओज्यूं टेक लावता। गरमी री टैम मांय धूणी कोनी धुकती, पण सरदी में सगळां बिचाळै धूणी धुक्या करती।

गांव में काम सारू सरकारी हाकम, पटवारी, सिपाही आद आवता तद लंबरदार री बैठक में रुकता। जाण–पिछाण वाळा ई नीं, राह–बगता बटाऊ भी रातवासौ लेवता। सैंग जणा नैं डोळ–माजणै सारू आवभगत अर रोटी–खाट मिळती।

सूरज भगवान रौ रथ जियां घूमै बियां टैम रौ पहियौ भी सरकतौ रैयौ। लंबरदार आपरी उमर रा अस्सी फागण देख लिया। आंख्यां अर गोडा जबाब देयग्या। अब घर में अर बारै साहबराम री चालण लागगी। बीं रौ राजनीति करण रौ चस्कौ बधतौ गयौ। पंचायत रा चुणाव आयग्या। चौधरी रै बरजतां–बरजतां वौ सरपंच रै चुणाव में खड़्यौ होयग्यौ। उणरै साम्हीं ठाकर जसवंत सिंह खड़्यौ हौ। ईं सूं पैली गांव री पंचायत रौ चुणाव सदीव निर्विरोध होया करतौ। सैंग जणा भेळा होयनै पंच–सरपंच चुण लेवता। सरकार कानी सूं पुरस्कार में मोटी रकम लेयनै गांव रै विकास में लगा देवता।

जकी चूंतरी माथै आखै गांव री चौपाळ जुड़्या करती, गांव रै विकास री बातां होया करती, अबै बठै पटका–पछाड़ी री योजना बणण लागगी। चौधरी रै प्रभाव सूं आधै सूं बत्तौ गांव साहबराम कानी हौ। पण गांव तौ बंटग्यौ ई। चौधरी कनै सगळी बातां पूगती जद सैंग जणां नैं आ इज समझावतौ कै मन माठौ ना करौ। अेक–दूसरै री बुराई ना काढौ। जिकै नैं जनता चावैला वौ इज सरपंच बणसी। पण सुणै कुण? सगळा आपचायी करै। जियां–जियां चुणाव री तारीख नेड़ै आवती गई बियां–बियां खरचै रा खाळ बिगड़ण लागग्या। रिपियां रा पनाळा बैयग्या। छेवट जीत साहबराम री होयी।

चुणाव रै सालेक पछै चौधरी बीमार पड़ग्यौ। घणी दवा–दारू करीजी, पण स्हारौ नीं आयौ। अेक दिन वौ सगळा जणा नैं भेळा करनै बोल्यौ, ''इण दुनियां में कोई कोनी रैयौ। राम–रावण सरीखा नीं रैया। सबनैं अेक न अेक दिन जावणौ ई पड़ै। म्हैं तौ सोरौ–सुखी जाऊंलौ। म्हारै जी में अेक बात अटकी पड़ी है जकी थांनै कैयनै जाऊं। बीं पर चालस्यौ तौ सुख पावोला। खानदान रौ नांव ऊंचौ रैसी। धरती किसान री मां होवै। मां कदैई कोनी बंट सकै। वा

सगळा बेटां री मां होवै। जमीन नीं होवण सूं भूमिहीण बण जावै। म्हारौ औ कैवणौ है कै जमीन मत बांटज्यौ। समै सारू भेळा नीं रैय सकौ कोई बात कोनी, पण खेती मिळनै करज्या। फसल भलांई बांट लीजौ। जमीन बांटण री बेमारी चाल रैयी है। घणै टैम पैली म्हारै कनै खेती-बाड़ी अधिकारी आयौ। आ बात म्हनैं समझायी कै छोटा-छोटा जमीन रा टुकड़ा आरथिक दीठ सूं लाभप्रद नीं होवै। आज आपणै कनै तीन सौ बीघा जमीन है जद मोटी गुवाड़ी बाजै। आ इज जमीन म्हे भाई बांटल्यां तौ सौ-सौ बीघा पांती आवै। फेरूं आपणै टाबरां में बंटती जावै तौ छेवट दो-दो बीघा पांती आसी। किसान सूं आपणी औलाद मजूर बण जासी। आपां नैं टाबरां नैं पढावणा चाईजै, जकै सूं वै दूजा धंधा कर सकै। आपणा बडेरा कैया करता हा कै 'घण जाम्या ऊत जा कै घण बरस्यां', साहबराम नैं खास तौर सूं ताकीद करूं हूं कै थूं सरपंच है, सगळै गांव रौ खयाल राखी। आपणै कनै आवणियै री डोळ-माजनै सारू मदद करजै। सगळां रौ भलौ करजै। बुरौ कदैई मत बिचारजै।''

केई दिनां पछै चौधरी बिंयासी बरस री उमर लेय देवलोक होयग्यौ। सगळौ गांव दुख मनायौ कै म्हारौ रुखाळौ चल्यौ गयौ।

चौधरी री सीख घणा दिनां तांई कोनी मानीजी। गढ जैड़ौ मकान तीन हिस्सा में बंटग्यौ। बाखळ में दो भींतां खींचनै तीन हिस्सा कर दिया। खेत ई बंटग्या। जमीन बंटी जद घणी ले-दे, चख-चख होयी। रिस्तेदार भेळा होया। आपस में खींचाताण होयी। जकौ घर सगळै इलाकै री पंचायती करज्या करतौ, अबै दूजा लोग उण घर री पंचायती करण लागग्या। छेवट चौधरी रतनाराम रौ बेटौ दुनीराम ई आपरी मां रै कैवण सूं कम उपजाऊ अर टीबै वाळी जमीन लेवण सारू राजी होयग्यौ। जमीन कांई बंटी, मन भी बंटग्या। जकी चूंतरी माथै आखौ गांव भेळा होया करतौ, बठै अब घरवाळा ई भेळा नीं होवै। अबै वा सूनी पड़ी रैवै या उण माथै झाबरियो गंडक पड़्यौ रैवै।

कई सालां पछै दुनीराम री छोरी चंदा रौ ब्यांव मंडग्यौ। दिनुगै-आथण गीत गाईजै। घर रा नीं आवै। आड़ोसी-पाड़ोसी जरूर आवै। इण मौकै परिवाररौ बामण तेजाराम आयौ। तेजाराम चौधरी रै देवलोक री बगत आयौ हौ। बाखळ में भींतां खींची देखनै उदास होयग्यौ। नीं बठै घोड़ी हिणहिणावै ही अर नीं मदुवौ बलबलावै हौ। भींत रै खूणै में बंधी डाग जरूर अरड़ावै ही। पंडतजी सगळा भाइयां रै घरां गयौ। सैंग जणा सूं रामा-स्यामा करी। हालात रौ जायजौ लियौ।

आथण पौर में रोटी जीमनै बैठक में जा बैठ्यौ। केई ताळ तांई अेकलौ ई बीड़ी फूंकतौ रैयौ। फेर मांची पर आडौ होयग्यौ। सांमली भींत माथै महात्मा गांधी री तस्वीर टंग रैयी ही। बीं तस्वीर रै तळै रतनाराम चौधरी री। तेजाराम सोच में पड़ग्यौ कै इण बापू गांधी देस नैं बांटण वाळी बात रौ घणौ विरोध करज्यौ। लोगां नैं, नेतावां नैं कितरा समझाया। भारत म्हारी मां है। आपणी सगळां री मां है। भेळा रैवौ, पण जिन्ना सरीखा धरमांध माणस हित री बात नीं सुणी। देस बंटग्यौ—तीन हिस्सां में। लाखू माणस तबाह होयग्या। हजारूं सुहाग उजड़ग्या। घणी उथळ-पाथळ माची। देस नैं बांट कांई सुखी होया। चौधरी भी घणा समझाया। जमीन मत बांटज्यौ। बीं रै जावतां ई जमीन बंटगी। घर बंटग्या अर सागै मन ई बंटग्या।

थोड़ी ताळ पछै तेजाराम कनै दुन्नीराम चिलम भरनै बैठग्यौ। केई ताळ तांई घरबार, गांव-गुवाड़ री बातां होयी। दुन्नीराम सगळी कहाणी बंटवारै री सुणाय दी। सुणनै तेजाराम बोल्यौ, ''चौधरी री बात पर थे सगळा जणा कोनी चाल्या। घर-जमीन बंटग्या। संपत कोनी रैयी। आ बात सैं सूं माड़ी होयी। ईंट जुड़्यां भींत खड़ी होवै। भींत पड़ी अर डगळिया खिंड्या। म्हैं थांनैं कैवूं कै ओज्यूं भी भेळा होय सकौ हौ।''

''म्हे फंट्योड़ा कीकर भेळा हो सकां हां पंडतजी? म्हांरा तौ मुसाण ई कोनी मिळै।'' दुन्नीराम बोल्यौ।

तेजाराम पडूत्तर देवतौ थकौ बोल्यौ, ''थांरा सगळां रा ओळ-नाळा जद अेक जग्यां गड्या है तौ मुसाण ई अेक जग्यां रैसी। थूं बडै मिनख चौधरी रतनाराम रौ बेटौ कुहावै। टूटी जेवड़ी नैं फेरूं जोड़। बिना गांठ लगायां बट लगायनै पाछी जोड़। चंदा रौ ब्यांव है। परिवार बिना ब्यांव फूठरौ नीं लागै। चंदा, रतनाराम री पोती नीं है, हेतराम

अर साहबराम री ई पोती है। थूं म्हारै सागै चाल, म्हैं सारी बात कर लेस्यूं। ब्यांव पर भेळा करणा म्हारै जिम्मै। म्हैं तौ सगळां रौ ई साझौ बामण हूं।''

केई ताळ तांई दोनूं जणा में बाथा-झोड़ होयौ। दूजै दिन आगै पंडित तेजाराम अर लारै दुन्नीराम आपरै दोनूं काकां रै घरां कानी जावतौ दीस्यौ।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

कारूंदा=काम करण वाळा। अपूठौ=पाछौ। सदीव=हमेसा। चूंतरी=चौकी। मन माठौ करणौ=मन खराब करणौ। गुवाड़ी=मोटौ परिवार। आथण=सिंझ्या। माणस=मिनख, आदमी। ताळ=बगत, टैम। संपत=भेळप। ओज्यूं=हाल तांई। कोड=हरख, उमाव। भाख=भोर, दिनुगौ। सीरी=सैयोगी, साझेदार। मुसाण=समसाण। चख-चख=कळह, मुखजोरी। फूठरौ=सुंदर। साझौ=भेळप रौ, सिरोळौ। निपज=उपज, नेपा। मोकळी=घणी, ज्यादा।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. चौधरी कनै कुल कित्ता बीघा जमीन ही?

   (अ) तीन सौ बीघा (ब) दो सौ बीघा

   (स) पांच सौ बीघा (द) सौ बीघा

   ( )

2. चौधरी रतनाराम टाळ उणरै कित्ता भाई हा?

   (अ) तीन (ब) दो

   (स) अेक (द) चार

   ( )

3. खेती रा सगळा काम ट्रैक्टर सूं होवता हा, पण चौधरी नैं पुराणी रीत सारू किणरौ घणौ कोड हो?

   (अ) घोड़ी (ब) बळद

   (स) ऊंठ (द) घोड़ौ

   ( )

4. चौधरी री पोती रौ ब्यांव हो, वा किणरी बेटी ही?

   (अ) रतनाराम री (ब) साहब राम री

   (स) हेतराम री (द) दुन्नीराम री

   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. चौधरी रौ किसौ भाई ज्यादा पढ्योड़ौ हो, जिकौ राजनीति में ई रुचि लेवतौ हो?
2. चौधरी नैं सवारी सारू किणरौ कोड हो?

3. कहाणी में लंबरदार किणनै कैयौ गयौ है ?
4. चौधरी रै मांचौ पकड़्यां पछै घर अर बारै किणरी ज्यादा चालण लागगी ही ?

छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. चौधरी आपरा दिन नैड़ा आवता देखनै सगळा जणां नैं भेळा करनै कांई हिदायत दीवी ही ?
2. ''घण जाम्या ऊत जा कै घण बरस्यां।'' इण कैवत रौ खुलासौ करता थकां समझावौ।
3. ''जमीं कांई बंटी, मन भी बंटग्या।'' इणनैं समझायनै लिखौ।
4. तेजराम बामण रौ चरित्र-चित्रण करौ।
5. 'बंटवारौ' कहाणी कांई संदेस देवै।

लेखरूप पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. ''घर री गुवाड़ी रौ आप-आपरै स्वस्थ अर गांव री खुसहाली रौ राजनीति रा पड़पंच बंटवारौ कर दियौ।'' कहाणी रै कथ्य री दीठ सूं इण बात रौ खुलासौ करौ।
2. चौधरी रतनाराम रौ चरित्र-चित्रण करता थकां आ बात सुभव करौ कै कीकर वै गांव अर आपरी गुवाड़ी रौ भलौ सोचण वाळा मिनख हा।
3. कहाणी रै मूळ तत्त्वां रै आधार माथै 'बंटवारौ' कहाणी री समालोचना करौ।

नीचै दिरीज्या गद्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. चौधरी रै घरै दूध-छाछ री कमी नीं ही। तीन भैंस अर पांच-छह गायां नोहरै में हरदम बंधी रैवती। दिन ऊगणै सूं पैली ई बिलोवणै री आवाज उगाड़ में दूर-दूर तांई सुणीजती। भाख फाटतां रै सागै गांव री लुगायां अर टाबर लोटा, हांडी अर जग लेयनै छाछ खातर चौधरी री ड्योढी माथै ऊभा होय जावता।

2. चौधरी री सीख घणा दिनां तांई कोनी मानीजी। गढ जैड़ौ मकान तीन हिस्सा में बंटग्यौ। बाखळ में दो भींतां खींचनै तीन हिस्सा कर दिया। खेत ई बंटग्या। जमीन बंटी जद घणी ले-दे, चख-चख होयी। रिस्तेदार भेळा होया। आपस में खींचाताण होयी। जकौ घर सगळै इलाकै री पंचायती करया करतौ, अबै दूजा लोग उण घर री पंचायती करण लागग्या।

3. तेजाराम पड़ूत्तर देवतौ थकौ बोल्यौ, ''थांरा सगळां रा ओळ-नाळा जद अेक जग्यां गड्या है तौ मुसाण ई अेक जग्यां रैसी। थूं बडै मिनख चौधरी रतनाराम रौ बेटौ कुहावै। टूटी जेवड़ी नैं फेरूं जोड़। बिना गांठ लगायां बट लगायनै पाछी जोड़। चंदा रौ ब्यांव है। परिवार बिना ब्यांव फूठरौ नीं लागै। चंदा, रतनाराम री पोती नीं है, हेतराम अर साहबराम री ई पोती है। थूं म्हारै सागै चाल, म्हैं सारी बात कर लेस्यूं। ब्यांव पर भेळा करणा म्हारै जिम्मै। म्हैं तौ सगळां रौ ई साझौ बामण हूं।''